

गोलोकविहारी का ब्रजागमन

छठवाँ प्रेमी- (जय हो ! जय हो !) जुग-जुग जिओ मेरे प्यारे साई ! मधुर स्वामी, क्या सुनाऊँ ? मैंने आज बड़ा ही अलौकिक आश्चर्यमय दृश्य देखा । आपके कृपा के राज्य में विचरण करता हुआ मैं आज श्रीगोलोक धाम में पहुँचा । वहाँ विरजा नदी के तट पर श्रीगोलाक बिहारी युगलसरकार गलबहियाँ दे घूम रहे थे और प्रेमसे झूमते हुए दोनों परस्पर एक दूसरे के करकमलों को चूम रहे थे । मैं भी चरणकमलों के चिन्ह देखती पीछे-पीछे चली । युगलसरकार तो 'परस्पर दोउ चकोर दोउ चन्दा' हैं हीं, जब दोनों मिल रहे हों, घुल-घुलकर बातें कर रहें हों, नेत्रों के प्यालों से एक-दूसरे के रूपामृत का पान कर रहे हों, तब उन्हें इस बात का पता रहे कि हम कहाँ जा रहे हैं, यह भला कैसे सम्भव है ? जब श्रीलक्ष्मीनारायण ने अपने पार्षदों सहित आकर वन्दना की तब पता चला-अरे ! यह तो वैकुण्ठ है । परस्पर शिष्टाचार कर आगे बढ़ रहे थे । ब्रह्मलोक गया, शिवलोक गया । आनन्दकन्द श्रीगोलोकबिहारी; मधुरश्याम, श्रीकृष्ण एवं उनकी प्राणाधिका नित्य-आराधिका परम प्रेष्ठ श्रीस्वामिनीजू एक दिव्य सत्संगलोक में आ गये । वहाँ एक दिव्य उद्यान था । जिसमें पाँच रसों के पाँच रंगे फूलों से लहलहाते हुए पाँच कुंज थे । इस दिव्य शोभा-पुंज कुंज को देखकर युगल सरकार मुग्ध हो गये और अत्यन्त भोलेपन से सन्तरूप मालिनियों

से प्रश्न किया- “अरी बड़भागिनी मालिनियों ! यह सुन्दर, सुरभि, अद्भुत पुष्प कहाँ से आये हैं ? इनकी भीनी-भीनी महक से तो हम लोग भी मस्त हो रहे हैं ।” मालिनियाँ बोलीं- “प्यारे प्रभु ! यह फूल नहीं हैं ? यह तो प्रेमियों के हृदय के नये-नये भाव जगमगा रहे हैं । उनकी काव्यमय संगीत की आलाप-पंक्ति ही पुष्पों पर रेखा के समान लिखी हुई है । बड़े-बड़े सन्त रसिक भ्रमर बन-बनकर उसे पढ़ रहे हैं और गुंजार कर रहे हैं ।

यगुलसरकार ने पूछा- “ वे प्रेमी कहाँ हैं ?”

मालिनियों ने कहा- “ वे इस समय पृथ्वी पर प्रभु-गुणानुवाद के जल से इन भावमय पुष्पों को सींच रहे हैं ।”

यह सुनकर भोले-भाले प्रियतम उन प्रेमी सन्तों का दर्शन करने के लिये अत्यन्त उत्सुक, मुग्ध हो गये और ब्रजमण्डल में आ गये । लगे प्रेमियों को ढूँढने । प्रियतम ने जो प्यारी के हृदय की ओर देखा तो उसमें कुछ प्यास मालूम पड़ी । वैसे तो श्रीप्रियाजू का हृदय प्यास रूप ही है और वह नित्य श्यामामृत का पान करते रहते पर भी बुझती नहीं है, बढ़ती ही जाती है-“ प्यारीजू को रूप मानों प्यास का ही कोई रूप है ।” तथापि प्रियाजी की प्यास प्रियतम से सहन नहीं हुई । श्यामसुन्दर जल लेने श्रीवृन्दावन की ओर दौड़ पड़े । वियोग से लगी प्यास तो मिलन से बुझती है, परन्तु मिलन में लगी प्यास कैसे बुझे ? वियोग से ?

एक तो श्रीवृन्दावन स्वयं ही वन है । भूल ही यहाँ का स्वरूप है । दूसरे यहाँ की गलियाँ बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी, गोकुलगाँव को पैड़ो ही न्यारो, तीसरे श्रीश्यामसुन्दर सीधे-सादे भोरे-भारे, चौथे प्रेमके नशे में चूर, पाँचवे श्रीप्रियाजी की स्मृति में छके हुये, अतः नित्य-नूतन मार्ग को पहचान न सके । एक वृक्ष के नीचे श्रीप्रियाजी के ध्यान में मग्न हो बैठ गये । यहाँ श्रीप्रियाजी प्रियतम को जाते देख ध्यानमग्न हो गयीं । उसी समय बरसाने से श्रीवृषभानुराय और नन्दगाँव से श्रीनन्दराय बड़े सुन्दर घोड़ों पर सवार होकर निकले । और दोमिल वन से होकर अलग-अलग लौटने लगे । इधर श्रीवृषभानुराय ने देखा के एक नन्हीं-सी बालिका प्रेम से नेत्र मूँदकर बैठी है । उधर श्रीनन्दराय ने देखा कि एक वृक्ष के नीचे सांवरा सलोना, कृष्ण मृग छौना-सा बालक आँख मूँदे बैठा है । दोनों ही घोड़ों से उतर पड़े । दोनोंने, दोनों को अपने हृदय से लगाया । स्नेह में सराबोर हो गये । दोनों ही घोड़ों पर चढ़ा-चढ़ाकर अपने-अपने घरों में ले आये । माताओं ने आल्हादित होकर आरती उतारी । इधर श्रीकीर्ति-रानी, उधर श्रीयशोदा महारानी, दोनों ही दोनों शिशुओं को गोद में लेकर परम आल्हादित हुईं । सारे ब्रजमण्डल में धूम मच गयी । युगल अपनी माताओं की गोद में किलकने लगे । बरसाने में लोग गाने लगे-“जय जय श्रीवृषभानु किशोरी ।” उधर नन्दगाँव में-“नन्द के आनन्द भयो जै कन्हैया लाल की ।” “नन्द महर घर ढोटा जायो, बरसाने ते टीको आयो !!”

